वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. ए. पूर्वार्द्ध परीक्षा

एमएएचडी-02

आधुनिक काव्य

अवधि 3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

निर्देश : प्रश्न पत्र खण्ड अ, ब और स में विभाजित है। खण्ड 'अ' अतिलघूत्तरात्मक है, खण्ड 'ब' लघूत्तरात्मक एवं खण्ड 'स' में निबंधात्मक प्रश्न सम्मिलित हैं।

खण्ड ब

इस खण्ड में 8 प्रश्न सम्मिलित हैं। निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न कीजिए। शब्द सीमा लगभग 100 से 150 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है। 8 × 4 = 32

प्रश्न 10 निम्न पद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूण कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराण
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आसूं लेते वे पद पखार
हंस उठते पल में आर्द्र नयन
धूल जाता ओटों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर सज्जित विराग
आँखें देती सर्वस्व बार।

प्रश्न 2 निम्न पद्यांश की व्याख्या कीजिए।

कालीदास, सच-सच बतलाना।
इन्दुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोए थे ?
कालीदास, सच-सच बतलाना।
शिवजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
वृतमिश्रित सुखी समिधासम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रन्दन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोए थे ?

प्रश्न 3 निम्न पधांश की व्याख्या कीजिए।

कहाँ तो तय था चिरांगा हरेक घर के लिए

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चले और उम्र भर के लिए
न हो कमीज तो पावों से पेट ढँक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।

प्रश्न 4 'जूही की कली' कविता के मूल भाव लिखिए।

प्रश्न 5 मैथलीशरण गुप्त राष्ट्रीय चेतना के कवि है। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 6 दिनकर के 'कुरूक्षैत्र' के आधार पर युद्ध के मनोविज्ञान व चिन्तन पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 7 अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 8 महादेवी के रहस्यवाद पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 9 निम्न पद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

हे भारत भद्र अब कहो अभीप्सित अपना
सब सजग हो गये, भंग हुआ ज्यों सपना
हे आर्य क्या रहा भरत अभीप्सित अब भी
मिल गया अकंटक राज्य उसे जब, तब भी ?
पाया तुमने तरू-तले अरण्य बसेरा
रह गया अभीप्सित शेष तदापि क्या मेरा ?

प्रश्न 10 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न
अमल-कोमल-तनु तरूणी-जुही की कली
दृग बंन्द किये, शिथिल, पत्रांक में,
बसन्ती निशा थी,
विरह-विधुर-प्रिया संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।

प्रश्न 11 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

मैं सब दिन पाषाण नहीं था।
किसी शापवश हो निर्वासित
लीन हुई चेतन्ता मेरी
मन-मन्दिर का दीप बुझ गया
मेरी दुनिया हुई अन्धेरी
पर यह उजड़ा उपवन सब दिन बियावान सुनसान नहीं था।

प्रश्न 12 पठिन कविताओं के आधार पर निराला की सौन्दर्य चेतना पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 13 रहस्यवाद की विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

प्रश्न 14 प्रयोगवाद में अज्ञेय के महत्व का निरूपण कीजिए।

प्रश्न 15 नई कविता में व्यक्त अभिव्यंजना कौशल पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 16 नागार्जुन की कविता सामाजिक यथार्थ का जीवन्त दस्तावेज है। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 17 निम्न पद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की प्याली
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा
हरी-भरी सी दौड़-धूप, ओ जलमाया की चल रेखा।

प्रश्न 18 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

श्रेय नहीं कुछ मेरा
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में
वीणा के माध्यम से अपने को मैने
सब कुछ को सौंप दिया था
सुना आपने जो वह मेरा नहीं
न वीणा का था
वह तो सब कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाना है।

प्रश्न 19 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

अन्य होंगे चरण हारे
और जो हैं लौटते, दे शूल को संकल्प सारे
दु:खवती निर्माण उन्माद, यह अमरता नापते पद
बाँध देगे - संसृति से तिमिर में स्वर्णबेला
दूसरी होगी कहानी
शून्य में जिसके मिटे स्वर, धूलि में खोयी निशानी।

प्रश्न 20 रघुवीर सहाय की कविता समकालीन भारतीय समाज के जीवन यथार्थ को प्रस्तुत करती है। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 21 हालावाद को परिभाषित करते हुए हरिवंश राय बच्चन की कविताओं की विशेषता निरूपित कीजिए।

प्रश्न 22 क्रान्तिकारी कवि निराला का काव्यागत विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

प्रश्न 23 नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा' का भाव सौन्दर्य लीखिए।

प्रश्न 24 प्रगतिवाद की विशेषताओं को निरूपित कीजिए।

प्रश्न 25 निम्न पद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

हाय! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिव पूजन ?
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।
स्फटिक-सौंध में हो श्रृंगार मरण का शोभन,
नग्न, क्षुधातुर, वस विहीन रहें जीवित जन ?
मानव! ऐसी भी विरक्ति क्या जीवन के प्रति ?

आत्मा का अपमान, प्रेत और छाया से रति!!
प्रेम अर्चना यहीं, करे हम रण का वरण ?
स्थापित कर कंकाल, भरे जीवन का प्रांगण ?

प्रश्न 26 निम्न पद्यांश की संप्रसंग व्याख्या कीजिए।

सब डूबे तिरे, झिपे जागे -
हो रहे वंशवद स्तब्ध
इयजा सब की अलग-अलग जागी
संघीत हुई पा गई विलय।
वीणा फिर मूक हो गई।

प्रश्न 27 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

जनता के लिए लड़ो या न लड़ो
भारत पाकिस्तान अलग-अलग करो
फिर मरो कि ढलकर
भूल जाओ
राजनीति
अध्यापक याद करो किसके आदमी हो तुम
एक दर्जा नीचे
किसका आदमी बनता है - दर्द ?

प्रश्न 28 मैथिलीशरण गुप्त के साकेत का परिचय दीजिए।

प्रश्न 29 जूही की कली का मूल भाव लीखिए।

प्रश्न 30 महादेवी के दु:खवाद पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 31 नागार्जुन राजनीतिक व्यंग्य के कवि हैं ? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 32 पंत की काव्य संवेदना पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 33 निम्न पद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिद जाते बन पराण
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग,
आँसू लेते वे पद पखार
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धूल जाता ओठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आँखें देती सर्वस्व वार।

प्रश्न 34 निम्न गधांश की व्याख्या कीजिए।

प्रथम रशिम का आना रंगिणि।
तूने कैसे पहचाना ?

कहाँ-कहाँ हे बाल-विहंगनि।
पाया, तूने यह गाना ?
सोयी थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर
झूम रहे थे, घूम द्वार पर
प्रहरी-से जुगनू नाना।

प्रश्न 35 निम्न गद्यांश की व्याख्या कीजिए।
कहाँ तो तय था चिराग हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहाँ से चले और उम्र भर के लिए
न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।

प्रश्न 36 प्रसाद सौन्दर्यबोध के कवि है ? पठित कविताओं के आधार पर सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 37 समकालीन विसंगति बोध व विडम्बना के कवि है रघुवीर सहाय। 'रामदास' कविता के आधार पर प्रमाणित कीजिए।

प्रश्न 38 कुरूक्षेत्र युद्ध की समस्या पर एक विचार कविता है। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 39 मैथिलीशरण गुप्त द्वारा प्रस्तुत 'उर्मिला' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न 40 'सागर मुद्रा' कविता का मूल भाव लिखिए।

प्रश्न 41 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था
चेतनता एक विलसती
आनंद अखण्ड घना था।

प्रश्न 42 निम्न पद्यांश की व्याख्या कीजिए।
चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग तुझको दूर जाना
अचल हिमगिरि हृदय में आज चाहे कम्प हो ले
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्यौम रो ले
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया
आज या विधुत-शिखाओं में निठुर तुफान बोले
पर तुझे है नाश-पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना
जाग तूझको दूर जाना।

प्रश्न 43 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत-सहस्त्र ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्माद परिमल

के पीछे, धावित हो होकर
तरल तरूण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

प्रश्न 44 "मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के अमर गायक हैं" स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न 45 पन्त की प्रकृति चेतना पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 46 प्रगतिवाद की विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

प्रश्न 47 दुष्यन्त कुमार के संग्रह 'साये में धूप' के मूल भाव का निरूपण कीजिए।

प्रश्न 48 अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 49 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
रघुकुल में भी थी एक अभगिन रानी
निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा
धिक्कार उसे था महास्वार्थ ने घेरा।
सौ बार धन्य वह एक लाल की माई
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई
पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई
सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।

प्रश्न 50 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्यख्या कीजिए।
दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या-सुन्दरी परी-सी
तिमिरांचल में चंचल का नहीं कहीं आभास
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर
किन्तु गम्भीर नहीं है उनमें हास-विलास।

प्रश्न 51 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
युद्ध की ज्वर-भीति से हो मुक्त,
जबकि होगी, सतय की वसुन्धा सुधा से युक्त।
श्रेय होगा सुष्ठु-विकसित मनुज का वह काल,
जब नहीं होगी धरा नर के रूधिर से लाल।
श्रेय होगा धर्म का आलोक वह निर्बन्ध,
मनुज जोडेगा मनुज से जब उचित सम्बन्ध।
साम्य की वह रश्मि सिनग्ध, उदार
कब सुकोमल ज्योति से अभिसिक्त
हो, सरस होंगे जली, सूखी रसा के प्राण ?

प्रश्न 52 प्रसाद जी के रचनाकार व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 53 'मैं अकेला' नामक कविता का मूल भाव लीखिए।

प्रश्न 54 कुरूक्षेत्र युद्ध की समस्या के समाधान का ग्रंथ है। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 55 महादेवी वर्मा की गीतात्मक व्यंजना पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 56 रघुवीर सहाय की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 57 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

अरी उपेक्षा-भरी अमरते! श्री अतृप्ति! निर्बाध विलास
द्विधा-रहित अपलक नयनों की भूख भरी दर्वान की प्यास!
बिछुड़े तेरे सब आलिंगन, पुलक स्पर्श का पता नहीं
मधुबन चुंबन कातरतायें, आज न मुख को सता रहीं।

प्रश्न 58 निम्न पधांश की व्याख्या कीजिए -

कालिदास, सच-सच बतलाना
परपीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थक कर औ चूर-चूर हो
अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर, तुम तब तक सोए थे ?
रोया यक्ष की तुम रोए थे ?
कालिदास, सच-सच बतलाना!

प्रश्न 59 निम्न पधांश की व्याख्या कीजिए -

लोगों, मेरे देश के लोगों अैर उनके नेताओं
मैं सिर्फ एक कवि हूँ
मैं तुम्हें रोटी नहीं दे सकता न उसके साथ खाने के लिए गम
न मैं मिटा सकता हूँ ईश्वर के विषय में तुम्हारा सम्भ्रम
लोगों मैं श्रेष्ठ लोगों मुझे माफ करो
मैं तुम्हारे साथ आ नहीं सक्ता।

प्रश्न 60 मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय चेतना के कवि है ? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 61 'श्रद्धा सर्ग' का मूल भाव लिखिए।

प्रश्न 62 निराला की कविताओं में व्याप्त सामाजिक संदेश को प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न 63 'कुरूक्षेत्र' युद्ध की मनोभूमि का जीवंत दस्तावेज है। सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 64 रघुवीर सहाय की कविता 'भारत भाग्य विधाता' का मूल भाव लिखिए।

प्रश्न 65 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

औरों के हाथों को यहाँ खड़ी नहीं पलती हूँ।
अपने पैरों पर आप खड़ी चलती हूँ।
श्रमवारि बिन्दु फल स्वास्थ्य शुचि फलती हूँ
अपने अचल से व्यंजन आप झलती हूँ।
तनु-लता-सफलता-स्वाद आज हो आया
तेरी कुटिया में राजभवन मन आया।

प्रश्न 66 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

इस धारा सा ही जग का क्रम, शाश्वत, इस जीवन का उदगम
शाश्वत है गति! शाश्वत संगम!
शाश्वत लघु लहरों का विलास!
हे जग जीवन के कर्णधार! चिर जन्म मरण के आर-पार

शाश्वत जीवन - नौका विहार

मै भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन क यह शाश्वत प्रमाण,

करता तुझको अमरत्व दान!

प्रश्न 67 निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

कहाँ तो तय था चिराँगा हरेक घर के लिए

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है

चलों यहाँ से चल और उम्र भर के लिए।

न ही कमीज तो पावों से पेट ढँक लेंगे।

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।

खुदा नहीं न सही, आदमी का ख्वाब सही

कोई हसीन-नजारा तो है नजर के लिए

प्रश्न 68 निराला की कविता 'स्नेह निर्झर बह गया' का मूल भाव लिखिए।

प्रश्न 69 महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषता पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 70 अज्ञेय की 'असाध्यवीणा' कलाकार की कला के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 71 नागार्जुन की कविता के कथ्य पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 72 रघुवीर सहाय की कविता 'भारत भाग्य विधाता' का मूल भाव लीखिए।

उत्तर तालिका खण्ड - ब

1 महादेवी वर्मा - 'जो तुम आ जाते एक बार'

2 नागाजुर्न - 'कालिदास सच सच बतलाना'

3 हरिवंश राय बच्चन 'साये में धूप'

9 मैथिलीशरण गुप्त - साकेत

10 निराला - जुंही की कली

11 नरेन्द्र शर्मा - पाषाण नहीं था

17 जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' 'चिन्ता सर्ग' से

18 अज्ञेय 'असाध्यवीणा' से

19 महादेवी वर्मा 'दीपशिखा' से लिया गया है।

25 पंत - 'ताज' कवित से

26 अज्ञेय - असाध्य वीणा

27 रघुवीर सहाय 'आत्महत्या के विरूद्ध'

33 महादेवी वर्मा

34 पंत - प्रथम रशिम

35 दुष्यन्त कुमार 'साये में धूप'

41 जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' के श्रद्धासर्ग से लिया गया है।

42 महादेवी वर्मा 'सान्ध्य गीत' से

43 नागार्जुन 'बादल को घिरते देखा' से

49 मैथिलीशरण गुप्त - 'साकेत' के अष्टम सर्ग से

50 निराला 'संध्या सुन्दरी'

51 दिनकर - 'कुरूक्षेत्र'

57 प्रसाद - चिन्ता सर्ग

58 नागार्जुन - मेघदूत

59 रघुवीर सहाय - आत्महत्या के विरूद्ध।

65 मैथिली शरण गुप्त - साकेत

66 पन्त - गुंजन, नौका विहार

67 दुष्यन्त कुमार, साये में धूप